REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

राहुल सांकृत्यायन की सामाजिक चेतना

डॉ. दुर्गावती सिंह
असि.प्रो. हिंदी , आर्य महिला पी.जी. कालेज,
शाहजहाँपुर (उ.प्र.).

प्रस्तावना :

राहुल सांकृत्यायन की प्रतिमा बहुमुखी थी और वे संपन्न विचारक थं। साहित्यकार अपने समाज को गंभीरतापूर्वक देखता है। सामाजिक गतिविधियों का दर्शक और भोक्ता होता है साथ ही समाज के भवष्यि का चिंतक भी होता है। ये सभी तत्त्व उसके रचनात्मक व्यक्तित्व को दिशा देते हैं और उसे पूर्ण बनाते है। राहुल सांकृत्यायन बहुआयामी रचनाकार थे। उन्होंने अपने लिए बहुत व्यापक और विशाल कार्यक्षेत्र वुना था। उनके समय का समाज चिंतन के जितने भी आयाम प्रस्तुत कर सकता था, उन सब पर उनका ध्यान था। समाज को देखकर विभिन्न मतमतांतरों को सुन–समझकर विभिन्न दार्शनिक पद्धतियों पर चिंतन–मनन करके उन्होंने अपनी रचनात्मक पृष्ठभूमि को समाज के संदर्भ में विकसित किया।

राहुल सांकृत्यायन जिस परिवार में पैदा हुये थे। वह परंपरागत मान्यताओं को मानने वाला ब्राह्मण परिवार था। ग्रामीण समाज मे विभिन्न जातियों, वर्णों और संप्रदाओं के लोगों के बीच अनेक स्तरों पर भेदभाव विद्यमान थे। अपने पैतृक गाँव 'कनैला' की सामाजिक संरचना का खुलासा करते हुए राहुल सांकृत्यायन अपने प्रपितामह गोपाल पाण्डेय के माध्यम से हमें उस सामाजिक स्तरीकरण को समझाते हैं,''सन्1957 में अभी गोपाल पाण्डेय या उनके दूसरे बंधुओं की स्थिति साधारण जमींदार–किसान की नहीं थी। भर, चमार और दूसरी जाति के लोग उनकी खेती करते थे और आप बाबू बने रहते थे। उनका कथन है,''कनैला के मालिकों को सरकार से कोई खास शिकायत नहीं हो सकती थी। क्योंकि उन्हें मालगुजारी भर समय पर दे देना पड़ता था। गाँव में उनका राज्य था। छोटी जाति वाले लोग दासों की तरह मर–मर के काम करते थे।''[1]

सामाजिक असमानता की यह स्थिति हर जगह विद्यमान थी। हिंदू धर्म में असमानता का बोलबाला था। शिक्षा, रोजगार, यहाँ तक कि युद्ध आदि के मामलों में भी जातिग्रस्त भेदभाव विद्यमान था। हिंदुस्तान के समाज के पुराने ढाँचों, गाँव–गाँव के अलग–विलग संगठनों और जाति–पाति को कोई तोड़ नहीं सकता था, अंग्रजी शासन में इसमें कमी तो आई, परंतु पूर्णरूप से यह समाप्त नहीं हो पाया। तत्कालीन समाज के ग्रामीण जीवन को रेखांकित करते हुए राहुल ने लिखा है,''ये सुंदर (गाँव) के प्रजातंत्र सिर्फ पड़ोसी गाँव से अपने गाँव की सीमा की रेखा की मुस्तैदी दिखा सकते थे। लेकिन अपने राजाओं की मनमानी को रोकने की उनमें जरा भी ताकत नहीं थी। हिंदुस्तान की सीमा की रक्षा की जिम्मेदारी सिर्फ राजाओं की रह गई। राजाओं का जुलुम और मनमानापन लाखों गाँव के पंचायतीराज में बंटे हिंदुस्तानी लोगों के रोकने की चीज नहीं रह गया। गाँव की पंचायतों में कारीगरों को हजारों वर्ष पुरानी रसूलों और कुरबानियों से चिपके रहने दिया। किसानों को हसुआ, हलों से एक कदम आगे बढ़ने नहीं दिया गया। जबकि दूसरे मुल्क वाले अपनी जुलमी राजाओं की गर्दन

1

कुल्हाड़ी से काट रहे थे। उस वक्त पर जुलुम , अन्याय, बर्दाश्त करके हिंदुस्तानी लोग कहते थे–''कोऊ नृप होई, हमै का हानी।''[2]

राहुल सांकृत्यायन ने इस सामाजिक व्यवस्था को बहुत करीब से देखा है। वर्णाश्रमी समाज में जातियों के वर्गों का रूपांतरण का चिंतन सामंती वर्ण–व्यवस्था पर आश्रित था। राहुल इस व्यवस्था के विलकुल पक्षधर नहीं थे। उनका कथन था कि वर्ण व्यवस्था जैसी मरण व्यवस्था का भारत में वे नाम नहीं रहना देना चाहिए। इस व्यवस्था कि खामियों को राहुल ने अपनी बहुत–सी रचनाओं में उजागर किया है। कहीं प्रासंगिक रूा से तो कहीं लक्ष्य बनाकर।

'कनैला की कथा' में जातीय व्यवस्था पर क्षोभ प्रकट करने वाले इस कथन को देखा जा सकता है,'' मेरे लड़के खदूरू क्यों नहीं फिरंगियों से लड़ने के लिए चुना गया। खदेरू किसी भी बड़ी जाति के जवान से कम मजबूत नहीं था। गाँव–पुर की मार में उसकी एक लाठी लेकर उसे हराने का भी शिकार किया था फिर फिरंगियों का शिकार करना क्या मुश्किल था। लेकिन युगों से चले आये सेतु को कौन तोड़ सकता थ, और काम में उनकी जाति वाले सहायता कर सकते, बल्कि सारे काम का ठेका ले कसते थे। पर जहाँ महाभारत और कुरुक्षेत्र का सवाल उठे, वहाँ उनको वीरगति प्राप्त करने का अधिकर हीं था। भोलाा इसको जानेते, तब भी उनकी भुजाएँ फड़क उठती थी।''[3]

इस कथन में भारतीय समाज की विशेषतया हिंदू समाज की जातीय भावना के स्वरूप को निरूपित किया गया है। गाँव में उड़ती–उड़ती खबर आई कि गोरों से लड़ाई चल रही है और कनैला से सभी सवर्ण जातियों के 12 जवानों को भेजा जाना तय हुआ। इस समूची प्रक्रिया से भोला भर और मँगरू चमार जैसे कि अंग्रेजों से लड़ाई करने, और इस बहाने देश की रक्षा करने का उत्तरदायित्व भी सवर्णों का है, छोटी जातियों के लोग इसमें भाग नहीं ले सकते। इस तथ्य को राहुल सांकृत्यायन के शब्दों में इस प्रकार देखा जा सकता है,''पड़ोस के गाँव की लड़ाइयों में गाँव के ब्राह्मण, अहीर, कहार, भर, चुड़िहार, दर्जी, चमार सभी को सम्मिलित होने का अधिकार था। मार की खबर मिलनी चाहिए। जो जहाँ होता वहीं से लाठी लेकर दौड़ पड़ता। बड़ी जाति और छोटी जाति वाले कैसे एक पाति में लड़ते। खान–पान में विशेष ध्यान देने की जरूरत पड़ती। आयी हुई चिट्ठी में यह भी नहीं लिखा था कि सभी कौमों के जवानों को बुलाया गया है। वातावरण में एक मौन संदेश फैला अहुआथा, पड़ोसी गाँव की लड़ाईयों में चाहें गाँव के सभी जाति के लोग शामिल हो पर अंग्रेजों से लड़ने के योग्य बड़ी जाति वाले ही है।''[4]

समाज का अधिकांश भाग किसान और मजदूरों का था। किसा मजदूर एक ओर तो जातीयता के दंश से पीड़ित थे, दूसरी ओर जमींदार और उनके नुमाइंदे उन्हें अपना गुलाम मान बैठे थे। वह लिखते हैं,'' किसान मरें चाहें जियें, जमींदार मार–मारकर धुर्रे उड़ा देगा। यदि उसकी मालगुजारी न बेबाक करो। पाँच रुपये तुमसे लेता है, एक रुपया कंपनी को देता है और चार रुपये अपने पेट में डालता है। खेत गया, गाँव गया, सात समंदर पार के डाकुओं ने हमारे ऊपर घर के डकैतों को ला बैठाया। पंचायत गयी, जो चार अक्षत उपजाते, वह भी आगम गया और जो कभी ठीक से वर्षा बूँदी,चार दाना घर आया तो मालिक, जमींदार, गोड़इत, चौकीदार, पटवारी, गुमशता कितनों की चोंच से बचे।''[5]

भारत का बहुजन समाज देशी–विदेशी सत्ता की जिस दोहरी गुलामी से त्रस्त था। उसी को लक्ष्य करते राहुल सांकृत्यायन का निष्कर्ष था कि ''हिंदुस्तान तो सबसे बड़े नरक में है। क्योंकि इसके ऊपर विलायती जोकों की भी गुलामी है और अपनी भी।''[6] कंपनी सरकार के नीचे जमींदारों को जबरदस्त सरकार थी, जिसके कारिंदों के मारे छान पर लौकी भी नहीं बचने पाती थी, फिर अकाल के लिए किसान क्या बचे रखे। इसके बावजूद जमींदार के कारिंदों का कृषक व दलित जातियों पर जोर जबरदस्ती का आलम यह था कि दूध की माँग पूरी न होने पर वे उनकी स्त्रियों के स्तन का दूध दुहने में पीछे न रहते थे। 'वोल्गा से गंगा' में रेखा अहीर के बहाने राहुल सांकृत्यायन ने किसानों की इस दुर्दशा को इस प्रकार व्यक्त किया गया है–''सबेरे रेखा का दूध

2
3
4
5
6

नहीं आया। प्यादा के जाने पर रेखा ने गाय, भैंस न होने की बात कही। मालिक ने पाँच मुस्टण्डों को हुक्म दिया–जाओं हरामजादों की औरत का दूध दुहकर लाओ। प्यादों चिल्लाती हुई मैंगरी के स्तनों को पकड़कर गिलास में सचमुच कई धार दूध की मारी।''[7]

श्राहुल सांकृत्यायन किसानो, कामगारों सिपाहियों, दासों, समाज से च्यूत भाग्यहीनों तथा कलाकारों के साहित्यकार है। उन्होंने जनसामान्य की सामाजिक विडंबनाओं को उजागर करने वाले पात्रों का सृजन किया है। इसके अलावा उन्होंने विभिन्न कथानकों के माध्यम से समाज के यथार्थ रूप को चित्रित किया है। सामाजिक समस्याओं के आलोचनात्मक विश्लेषण से उनकी दृष्टि व्यापक हुई और साथ ही उन्हें सामाजिक कार्यो में स्वयं भागीदार बनने की प्रेरणा मिली।

भारतीय समाज का विश्लेषण करते हुए राहुल ने समाज की शोषक शक्तियों को दीमिकों की संज्ञा दी है। उनकी एक पुस्तक 'तुम्हारी क्षय' है। इस पुस्तक को लिखते समय उनकी दुष्टि में भारत की आम जनता थी, जिसमें समझदारी और तर्कशक्ति जो अदभुत थी, पर राजनीतिक परिस्थितियों के कारण अक्षर–ज्ञान कम था। ऐसी जनता को समझाने के लिए वे व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग करते हैं तथा गहन विचारों का सामने लाते हैं। उनका समाज–दर्शन जातीय संरचना, वर्गभेद की स्थिति, समाज में नारियों की स्थिति,, न्याय व्यवस्था की कमियों आदि जैसे विंदुओं पर आधारित है। परंपरायें और मान्यताएं भारतीय मानसिकता को उन्नति के पथ पर अग्रसर करने के बजाय पीछे ले जाने वाली अधिक है।

भारतीय समाज की चिंतन पद्धति भाग्यवादी है। इसका सबसे त्रासद पक्ष है कि दुःख और समस्याओं से छुटकारा पाया ही नहीं जा सकता। इस सोच की अभिव्यक्ति हमारे समाज में कई रूप में होती है। दुःख–सुख हमेशा रहा और हमेशा रहेगा। अतः इसके बारे में सोचना ही बेकार है। इसी की अभिव्यक्ति इस रूप में होती है कि गरीब–अमीर हमेशा रहे हैं और हमेशा रहेंगे। यह सोच भी हमारे समाज में काफी हद तक बरकरार है कि दुःख–सुख पूर्व जन्मों का परिणाम है। यह विचारधारा भारतीय जीवन को एक बंधे–बंधाये ढाँचे से ऊपर उठने ही नहीं देती। राहुल सांकृत्यायन ने इन सभी का अनुभव प्राप्त किया था और उनकी रचनाओं में समाज के ये सभी मुद्दे उठाये गये हैं। कहीं इनका यथार्थ रूप में चित्रण भी किया गया है, कहीं सुखद संभावना के रूप में इन विडंबनाओं से मुक्त एक होकर एक आदर्श समाज की परिकल्पना की गयी है।

संदर्भ :

1.कनैला की कथा, राहुल सांकृत्यायन, पृ0 80–81
2.भागो नहीं दुनिया को बदलो, राहुल सांकृत्यायन, पृ0 48
3.कनैला की कथा, राहुल सांकृत्यायन, पृ0 86
4.कनैला की कथा, राहुल सांकृत्यायन, पृ0 84
5.वोल्गा से गंगा, राहुल सांकृत्यायन, पृ0 275
6.भागो नहीं दुनिया को बदलो, राहुल सांकृत्यायन, पृ0 117
7.वोल्गा से गंगा, राहुल सांकृत्यायन, पृ0 286

डॉ. दुर्गावती सिंह
असि.प्रो. हिंदी , आर्य महिला पी.जी. कालेज, शाहजहाँपुर (उ.प्र.).

7